

class - B.A. Part - I  
Sub - Hindi (Honors) Paper - I  
Written by Ravishan Kumar  
RBLR College Mathurapur

Q. सिद्ध साहित्य की प्रवृत्तियों पर

Ans

प्रकाश बाल ने बौद्ध धर्म के वर्णन  
तत्त्व का प्रचार करने के लिए  
जो साहित्य जन जाजा में लिखा  
वह हिन्दी में सिद्ध साहित्य की  
सीमा में आता है। राष्ट्र साहित्य  
न चौरासी सिद्धों के नामों का  
उल्लेख किया है, जिसमें सिद्ध सुरुष  
से यह साहित्य आरंभ होता है।  
इन सिद्धों में सरहपा, शबरपा, लुईपा,  
कन्हपा, एवं कुकुरिपा हिन्दी के  
मुख्य सिद्ध कवि हैं। यहाँ संक्षेप  
में इनके व्यक्तित्व एवं कृति  
का परिचय देकर हम साहित्य  
के विकास में उनकी भूमिका को  
स्पष्ट करने की चेष्टा करेंगे।  
सरहपा — ये सरहपाद, सरोजवर्धन  
राष्ट्रमित्र आदि कई नामों से  
प्रख्यात हैं। ज्ञाति से ये ब्रह्मण  
को। इनके रचनाकाल के विषय  
में सभी विद्वान् स्मृत नहीं  
हैं। राष्ट्र जी ने इनका समय  
तक 69 ई. माना है। जिसमें अचि  
कांक्ष विद्वान् स्मृत हैं, इनके द्वारा  
रचित बहूँस ग्रंथ बर्वाह जाते हैं।  
यि दोहाकाश नाम से हिन्दी की  
पंक्तियों में प्रसिद्ध है। इनकी कुछ



॥ नाद न विंदु न रवि न शशि

मंडल

सिअराडा सदावे मुकूत । ७

सरहपा की इस कविता

से स्पष्ट है कि उनकी भाषा  
तो हिन्दी ही है, केवल उसपर

यत्र - का अपभ्रंश का प्रभाव है।

भाव और शिल्प की जो परंपरा

संत साहित्य में जाकर नये

रूप में उभरी उसका बीज

रूप सरहपा के काव्य में प्रकट  
है।

शवरपा — इनका जन्म क्षत्रिय

कुल में १४० ई. में हुआ था।

सरहपा से इन्होंने ज्ञान प्राप्त

किया था। 'चर्यापद' इनकी प्रसिद्ध

रचना है। इनकी कुछ पक्तियाँ

प्रकट

॥ हेरी ये मेरी तइला बरी खसमेसमानुला

दुकहाये सेर कपास कुटिला

तइला वाहिर पासैर जोहना

वाड़ी तारुला । ७

लइपा — ये राजा चर्मपाल के

शासन काल में कायस्थ परिवार

में उत्पन्न हुए थे। शवरपा ने

इन्हें अपना शिष्य बनाया था।

इनकी साधना का प्रभाव देखकर

उड़ीसा के तत्कालीन राजा खं

मंत्री इनके शिष्य हो गये जो

चौरासी सिद्धों में इनका स्थान

सबसे ऊँचा माना जाता है।

इनकी कविता में रसपूर्ण भावना

की प्रधानता है।



इसका एक उदाहरण प्रस्तुत है -

॥ का आ तरवर पंच विडाल,  
चंचल चौर पडो काल,  
दित करिअ महासुद परिमाण  
हुइ मरमइ गुरु पुष्टि अजान । ॥

कवृपा - इनका जन्म कनक  
के प्रथम वंश में १२० ई. में  
हुआ था। बिहार के सोमपुरी  
स्थान में ये रहते थे। कई  
सिद्धों ने इसकी शिष्यता स्वीकार  
किए थे। इनके लिखे चौदह  
गंध ब्यास जाते हैं जो दाश-  
हिक विचारों से अभी ओतप्रोत  
हैं। एक उदाहरण प्रस्तुत है -

॥ आगम वेअ पुरणो  
पंडित मान वहति  
पक्क सिरिफाल आलिअ  
जिम बहरअ समरति । ॥  
इन प्रमुख सिद्ध कवियों के  
अतिरिक्त अन्य सिद्ध कवि भी  
अपनी वाणी का पुचार करते थे,  
जिन साहित्य के विकास में  
उसका उतना महत्व नहीं है  
जिन कवियों की पहले चर्चा  
की गयी है, उनका साहित्य ही  
सिद्ध साहित्य के लिए गौरव का  
विषय है, इन कवियों ने हिन्दी  
साहित्य में कविता की जो प्रवृत्तियाँ  
आरंभ की उनका प्रभाव अतिकाल  
तक चलता रहा। स्वामी के विरोध  
का जो अक्सरूपन जो कबीर आदि  
कवियों में मिलता है, इन  
सिद्ध कवियों की देन है।